

२९४/५ ३

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: इस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

२९४/च ३ (७४६)

ग्रंथ नाम

इतिहास चरित्र.

विषय

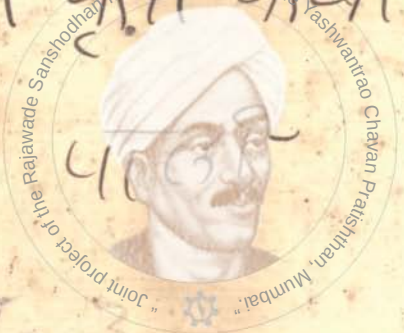
चरित्रें.

क्र. नं. ११

मराठी

चारित्र

नामा कृत कवीरचरित्र



मराठी

श्रीः लक्ष्मणसमर्थः ॥ आसावैके भूत ॥
॥ रा ॥ जो रामसे वेसी बरा ॥ संतसा धुआ ॥
॥ लीया घरा क दा पाठ मोरान के चि ॥ ११ ॥
॥ को फी येक जव बे सैरि ॥ आ हो जि मध्य ॥
॥ रा त्रिं च भरि ॥ मि को नि संत मां दि ब ॥
॥ आ ले ध रि कं बीरा आ ॥ २१ ॥ मग ली पुस ॥
॥ उ बो नि ॥ ला ग ले संता चं च रणि ॥ ३१ ॥
॥ चे ध न्य भा ग्य रु पो नि ॥ जो ली ये पि स ॥
॥ मी चि ॥ ३१ ॥ मे उ के को प ठं जं ज र ॥ ले थ ॥
॥ चे कु सु आ वी र ॥ वर वि ण उ प वा सि प ॥
॥ ना दं णु क थोर क वि रा चि ॥ ४१ ॥ त व बे स ॥
॥ व या का रणे ॥ का ठि ला वो आ ॥ ५१ ॥
॥ न ॥ संता सि दी ध ले बे स ॥ ६१ ॥
॥ ण उ भा ठे का ॥ ६१ ॥ क वी र ॥
॥ का ही न वे द्य करा दे व सि ॥ ७१ ॥
॥ रु ण उ नी त रे सि ॥ ८१ ॥
॥ ली ॥ ८१ ॥ बहु त सं क ठ प ड ले ना ॥
॥ हा ता धा न्य न से घ रि ॥ ९१ ॥
॥ ठ ली रा त्री ॥ जा ता बा जा ॥
॥ से ना ॥ १०१ ॥ प्रे ध व र्ष ति दा र ॥
॥ र वी पु ड ली आ ती क डी ण ॥ आ ले री स्म ॥
॥ र ली रा म नी धा न ॥ म ग झ उ क रि नी धा ॥
॥ ली ॥ ११ ॥ स व र ये उ नी वा णी व ल्लि सि ॥
॥ त व कु ल पे जालो दु का ना सि ॥ को फी ॥
॥ न बो ल ति को फा सी ॥ जन नि द्र सि म ॥
॥ च र्त ल ॥ १२१ ॥ म ग जा ली चि तां क्रां ता ॥
॥ द द ई ना म स्म र ण क रि ता ॥ त व दी ण ॥
॥ दे खि ल ॥ चि आ व ची ता ॥ ये क या दु का ॥
॥ ना त प री ये सि ॥ १३१ ॥ म ग जा उ नि दु का ॥
॥ ना ज व ली ॥ उ द्ध उ डो ति ये क फ ल ॥
॥ ना णी जा ग त त ये व ली ॥ त व आ ॥
ति बे की आ ली ते थ ॥ १४१ ॥
॥ तु क व णा चि के ण ॥ का आ ली ॥
॥ सरा त्री क रू नी ॥ क व ण रु स आ से ते ॥
॥ नि रो प णे ॥ श्रु त क र णे आ म्हा ला मि ॥
॥ ऐ के बा वा णि या दे उ नि चि त ॥ क वि ॥
॥ म मा श्रां जा णि जे का तं ॥ गृ हि पा हु णे ॥
॥ आ ले सा धु सं त ॥ रु णो नि क रि त पा ॥
॥ ठ विले ॥ १५१ ॥ पा डी जे रा मु ग्री आ म्हा ॥
॥ सि ॥ चि ल व न क रा वा द्या व था सि ॥ ले ॥
॥ खं डो ई ल ते तु म्हा सि ॥ आ णी न बु का ॥
॥ ना सि ॥ १६१ ॥ त व तो न द दू रा आ रि ॥
॥ आ ला का मा तुर आ रि ॥ क वा स ना ध ॥
॥ रा ली अ तं रि ॥ रु णे ये क वो सु दं रि व ॥
॥ च न मा से ॥ १७१ ॥ सां गे न ते अं गी क रा ॥
॥ वे ॥ म ग ला ग ले ति तु के न्या वे ॥ म नी ॥
॥ न ध रा वे ॥ ना ही त रि जा वे आ ॥
॥ गा रा ठ ॥ १८१ ॥ त व ते स व घी यी ॥
॥ वी ॥ दे खे न त या चि चें चं क रि ॥
॥ म ग रु ण व र वे गा से ठि ॥ वे गि उ ॥
॥ वो दे ई से व द ॥ १९१ ॥ आ धी सा मो ग्री ॥
॥ दे ई आ म्हा सि ॥ उ सी र जा ला पु जे सी ॥
॥ का र्ये स पा दु नी ये ई न व र सी ॥ या व ॥
॥ चे ना सि न ठ ले गा ॥ २०१ ॥ त व तो आ ॥
॥ चि स्वा सि न र ॥ त या सि के चा बु धी ॥
॥ चि वा र ॥ रु णे म ज भा क दे ई सा चा र ॥ त ॥
॥ री च र व रे वा ठ ल ॥ २११ ॥ म ग भा क दे उ ॥
॥ नी या ना रि ॥ स र्व सा मो ग्री चे त ली प ॥
॥ द रि ॥ ते थु नै नि द्या ली स उ क रि ॥ आ ॥
॥ ली ध रि ता की ल ॥ २२१ ॥ त व उ भ ये व ॥
॥ र्गि मी को न ॥ के ले सं त च र ण क्षा ल ॥
॥ चे त ली ती र्थ स मा धा न ॥ पु जा वि ॥
॥ न जा र जी ली ॥ २३१ ॥ के ली सं ॥

॥ तव आवचित आली पुढे ॥ २३ ॥
 ॥ लोल संतासि ॥ जालानवेदे आव
 ॥ यासी ॥ मगन मस्कारासि प्रवर्तले
 ॥ २३ ॥ कैले नमस्कार येकंदर ॥ मनिब
 ॥ नदलाक बीर ॥ म्हणे धन्य भाग्ये व्य
 ॥ जीथोर ॥ करणा कर मग ठले ॥ २४ ॥
 ॥ सर्व सांग्य विधी जाली ॥ आनदाची
 ॥ घडी लोठली ॥ संतुष्ट दे संतोशली
 ॥ समाधिस्त जाली स्वमुखे ॥ २४ ॥ ये
 ॥ सा संत या वा सा भाळीला ॥ मग क
 ॥ बीर श्रीनरयुणा वीला ॥ आता पाही
 ॥ जे निरोप दीधला ॥ रोब्ब सुलला
 ॥ जी मासा ॥ २५ ॥ तुम्ही आसिजे सता
 ॥ पासी ॥ मज सयक मग वचनासि ॥
 ॥ भाकदे उमिवाणि वासि ॥ सीमो सी
 ॥ लिखाणीले ॥ २५ ॥ याचे वनेत
 ॥ पुर्ण करणे ॥ म्हणे नि लागे मज ज
 ॥ ॥ उमिरडी ला उमवले दीन ॥ दि
 ॥ नती नयन बाणी यांचे ॥ २६ ॥
 ॥ ॥ म्हणे ये कांते ॥ मी येईन तुज सांगा
 ॥ मेघवर्षती आपर मीत नीसि बहुत
 ॥ जाली आसे ॥ २६ ॥ यावाणि याचा उपव
 ॥ ॥ आम्हाव जाला थोर ॥ मग स्कंदी
 ॥ बाहुनिया सुंदर ॥ वेगेवगय निघाला
 ॥ उभयता करिता ती स्मरण ॥ आतं रि
 ॥ आठ विलार घुनदंन ॥ गृही समाचार
 ॥ नचे ता जाण ॥ कोपती संजन आम्हा
 ॥ ॥ ॥ ३० ॥ मग येउनी दुकाना पासि ॥
 ॥ पुनं सोडीले स्त्री येसि ॥ म्हणे सयक रि
 ॥ बोभाकेसि ॥ वाणी यासि सुखदो वा
 ॥ वाणी घडात होलां वाढ ॥ म्हणे मग
 ॥ ती याधीद ॥ कैसि ठको नि येती

॥ ॥ तव आवचित आली पुढे ॥ २३ ॥
 ॥ ॥ हान घंताहा लाचाणि यासि ॥ म्हणे मि
 ॥ तरि येई गुणरासि ॥ ॥ ॥ सयकैले व
 ॥ चनासि ॥ नवलें तुज पासि दीसत आ
 ॥ ॥ ॥ ३३ ॥ बैसली स्वस्था निदो घे जण ॥ ३
 ॥ परिवार भीले बोलणे ॥ कोरडी आली
 ॥ कवण्या गुण मृतीके चरण भर ले नाडी
 ॥ ३४ ॥ वर नीवर्षता ती मेघ ॥ जाला कंद
 ॥ मवाहाती वोध ॥ कैसे कौतुक जाले तेसा
 ॥ गं आला वेगे करनीया ॥ ३५ ॥ येकें गासे
 ॥ ॥ ॥ ३६ ॥ बोलती जाली कवी
 ॥ ॥ ॥ ३७ ॥ तुझा उपकार नये सांगेतां
 ॥ ॥ ॥ ३८ ॥ जाले सतं स
 ॥ ॥ ॥ ३९ ॥ हेतव तुझे चीगा पुण्य ॥
 ॥ ॥ ॥ ४० ॥ उपकार उतीर्ण ॥ संरक्षण तु
 ॥ ॥ ॥ ४१ ॥ वीर जावाचा जावल ग
 ॥ ॥ ॥ ४२ ॥ स्कंदी वाही याचांग ॥ वरनी सा
 ॥ ॥ ॥ ४३ ॥ कोयेले सकीर्ण ॥ आणीले वेगे तुज पा
 ॥ ॥ ॥ ४४ ॥ आपण गेले होवरित ॥ गृही
 ॥ ॥ ॥ ४५ ॥ येकलें साधु सत ॥ आता साडी गात्रां ता
 ॥ ॥ ॥ ४६ ॥ पुर विमनोरथ आपुले ॥ ३९ ॥ ऐस बो लता
 ॥ ॥ ॥ ४७ ॥ ची सुंदर ॥ तव वाणी कापत से धरा थरा
 ॥ ॥ ॥ ४८ ॥ धी धी गज न्महे दातास ॥ वीघई आवीचा
 ॥ ॥ ॥ ४९ ॥ प्रवर्तले ॥ ॥ ॥ ५० ॥ मी मती हीन आस्नान मरी
 ॥ ॥ ॥ ५१ ॥ कुबुधी आमंगळ चारीरी ॥ व्यर्थ भुमि
 ॥ ॥ ॥ ५२ ॥ भार संसारि ॥ मग आतंरी प्रस्तावला
 ॥ ॥ ॥ ५३ ॥ होता विशये भाव मनी ॥ तो गळीत जा
 ॥ ॥ ॥ ५४ ॥ लात तक्षणी ॥ मग धावोनी सवरला ग
 ॥ ॥ ॥ ५५ ॥ लाचरणी मजला गि उधरावे ॥ ४२ ॥
 ॥ ॥ ५६ ॥ आन्याये जाला बो माते ॥ सर्व क्षमा
 ॥ ॥ ॥ ५७ ॥ वेरिवोनी वात ॥ तुस छळीले धैर्य

(3) ॥ श्री कबीर ॥

पती करनीया ॥ ४३ ॥ आ

कबीर सि ॥ भेरी करावी रोद्या

॥ नव्या नाना आतीसी ॥ म्हणोनी

सी सीरी घाली ॥ ४४ ॥ मग म्हणे गा भला

टी ॥ बरवा भाव धरिला सि फोटी ॥ आत

चला उठा उठी ॥ करणे भेरी कबीरानी

॥ मग उठली रोये जणे ॥ बरे सि साठवी

॥ दुकान ॥ वेजे चालती टाकी सुवन ॥ दे

॥ स्वीते चरण कबीराने ॥ ४५ ॥ घालला दीर्घ

॥ उंच तन मस्कार ॥ बाणी म्हणे मिळापरा

॥ धी धोर ॥ माझा कारावा उद्धार ॥ आभ

॥ ये करटे उनीया ॥ ४६ ॥ कबीर आले राना

॥ न पुर्ण ॥ वोळखीले तयाचे चीक ॥ मग

॥ स्व करे कुरुवाळुन ॥ दीधले दान आक्ष

॥ कबीर भक्ती स्नानी बोधायी ॥ सदा संत

॥ आणी उदसि ॥ जाला राम स्वये प्रकासि

॥ उठावा भास ॥ ४७ ॥ येथुनी कथा

॥ तुला ॥ ४८ ॥ गे ॥ पोतीया प्रती

॥ एक तादे वाच ॥ ४९ ॥ होय पा फीस

॥ स्व श्राने दं ॥ ५० ॥ इती श्री गुरु नामावली

॥ पठण करि जो प्राथः काळी ॥ तथा जा

॥ पाची होये होळी ॥ जाली देखा क्षणार्ध

॥ इती कबीर चेरी न सपुर्ण मस्तु ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

॥ बरवी संत चेरी न हो ॥ पुपाच न पुण्य पवी न

॥ संत पुरिजे पावन नंगरी लोक म्हणविते

॥ सतं परीक्षा करी तो गोरो ॥ जातीचा कुमो

॥ ५३ ॥ आखंड आस ध्यानी नि

॥ लवीठ लवाचे ॥ ५४ ॥ रागित बाळ

॥ उनीलेथे ॥ कातां गेली जीवना ॥ येउनी

॥ या साजाली ॥ तव ते कोठ नदी से नयना ॥

॥ ५५ ॥ ५६ ॥ फोतवची खळात जावळ मा

॥ दी सता दी जळो भजे न हेवा कभारी

॥ न पीठी लो होती ॥ ५७ ॥ ध्यान जडे

॥ होता ॥ ये ॥ ५८ ॥ पउतं की ॥ ये

॥ श्री कृष्ण कृतः ॥ आणवी ॥

॥ वरवी ॥ ॥ अकुर्नी काडी सुत सी ॥

॥ वधा सारी ॥ आसने नैमी जनः ॥ १ ॥

॥ चंडीली ते नारि ॥ ॥ तव तीजे आपल ॥

॥ ही जी प्रतीक ॥ सु हळ के ला ॥ चवथे ॥

॥ वसी पीता वधुची प्रार्थीता ॥ वरवी ॥ ॥

॥ जे काहारीचे दास सडन सान थोर नाडी ॥

॥ दोहीचे सम पाळण कीजे ॥ आणवी दोही ॥

॥ दाडि ॥ ॥ ॥ आवस्य म्हण उनी वस्त्रे ॥ वरवी ॥

॥ दोही ते सम पाळी ॥ ॥ ॥ आग स्य ॥

॥ न करिते काः वीचार करति जाली ॥ ११ ॥

॥ भ्रतार नीद्रस्त देखोनि ॥ दोही या दोही ॥

॥ बाही याचे पाणी दो उनी दृष्टि ॥ नीद्रस्त ॥

॥ करी ते समई ॥ वरवी ॥ ॥ ॥ जाग्रत हो ता ॥

॥ कर आन्याई शस्त्रा वरी आपटीले ॥ ॥

॥ मळ लोडीता मृग न जैसे ॥ थोठ के बाहु ॥

॥ जाले ॥ वरवी ॥ ॥ ॥ न देव कीर्तन करि ॥

॥ ताः कथं मिगे ॥ ॥ नाम घोष आन ॥

॥ दमे मे कर घट ॥ गला ॥ वरवी ॥ १२ ॥

॥ रागल बाळ धावत जाले ॥ मही मात्या ॥

॥ संताची ॥ वेदशास्त्र पुराण अधणे ॥ ॥

॥ ठीत जाली नत्वा ॥ वरवी ॥ १३ ॥ नामाक ॥

॥ ने संत संगे ॥ जे न्मो जे न्मी कावा ॥ आणी ॥

॥ कध काडी न मागे तुजला ॥ द्यावीचे ॥

॥ रणी सेवो ॥ वरवी ॥ १४ ॥ ॥ ॥

॥ मी न मेघ वसंतस्तु ॥ वैभमी धुन ग्रीष्मस्तु ॥

॥ तु कर्कसौ वृषा क्रतु ॥ कन्या लुक्क वारत ॥

॥ स्तु ॥ वृश्चिक धन हे मंतस्तु ॥ मकर कुम्भ ॥

॥ मसी क्रतु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ सोळा सं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ रुपे ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com